पत्रकारिता का करियर छोड़ यूपी के हस्तशिल्प के संरक्षण-संवर्द्धन का जुनून

संस्था बनाकर ढाई सौ से अधिक कारीगरों को जोड़ा

ई कामर्स वेबसाइट्स पर हिट हो रहे प्रोडक्ट

पांच दर्जन से अधिक प्रदर्शनी सह सेल में पसन्द किया गया कारीगरों का काम

मूंज कला को व्यावसायिक स्वरूप देने का लक्ष्य

विदेश से आ रही इको फ्रेण्डली मूंज प्रोडक्ट की मांग

लखनऊ की रेखा सिनहा ने 25 वर्षों के पत्रकारिता करियर को छोड़ कर उत्तरप्रदेश के लुप्त होते हस्तशिल्प के संरक्षण का काम शुरू करते समय ये सोचा भी नहीं था कि दो वर्ष पहले गठित संस्था के बनाये प्रोडक्ट इतने लोकप्रिय हो जाएंगे। केवल 10 कारीगरों और 10 हजार रुपये से शुरू एनजीओ 'रेखाकृति' के साथ आज पूरे प्रदेश के अलग-अलग जनपदों के ढाई सौ से अधिक कारीगर जुड़े हैं। ये कारीगर लगभग तीन सौ तरह के सामान बना रहे हैं। इनकी स्नैपडील, अमेजन, पेटीएम, शॉपक्लूज, ईबे, क्राफ्ट्सविला, लाइमरोड समेत कई ई कामर्स पोर्टल पर काफी मांग हैं। यही नहीं यूएसए, यूएई, ब्रिटेन, फ्रांस समेत कई देशों से बड़े आर्डर भी मिल रहे हैं।

अपने काम के बारे में रेखा सिनहा बताती हैं कि पत्रकारिता के दौरान एक स्टोरी कवर करने वह देवरिया गयी थीं। वहां बाढ़ प्रभावित गांव की गरीब महिलाओं से बातचीत कर रही थीं। खेत-खलिहान पानी में डूबे थे। उन्होंने एक महिला से कहा कि खेती के अलावा कोई और काम क्यों नहीं करती? जवाब मिला-और कुछ नहीं आता। तभी एक बुजुर्ग महिला पर उनकी नजर पड़ी। वह बहुत सुंदर मूंज की डलिया बना रही थी। उन्होंने महिलाओं से कहा- ये भी तो एक काम है। महिलाएं चौंक पड़ी। एक ने पूछा- कौन सा काम? उन्होंने मूंज की डलिया की ओर इशारा किया। बुजुर्ग महिला ने कहा कि ये तो पोती को शादी में देने के लिए बना रही हूं। दूसरी ने कहा- कौन खरीदेगा?, इस काम से पेट कैसे भरेगा? उनकी दयनीय दशा देखकर सुश्री सिनहा ने कहा- बहुत खरीददार मिलेंगे। अभी आपके पास जितने हैं, मैं खरीद लूंगी। उनके कहने की देर थी कि महिलाएं मूंज की डलिया, पिटारा आदि लेकर आ गयी। साइज के अनुसार 50 से 200 रुपये प्रति सामान भुगतान कर उन्होंने सब ले लिया। वह बताती हैं कि इन महिलाओं के चेहरे की खुशी आज भी स्मृति में ताजा है। फिर आने का वादा कर वह लखनऊ लौट आयी और अपनी नौकरी में व्यस्त हो गयीं। इस दौरान लुप्त होती कलाओं पर एक फीचर करने के उद्देश्य से वह वाराणसी गयीं। वहां लकड़ी के खिलौने बनाने वालों की बदहाली और शोषण ने उन्हें उद्वेलित कर दिया। वहां से लौटने के बाद उन्होंने तय किया कि इन लुप्त होती कलाओं और कलाकारों के लिए कुछ काम जरूर करूंगी। उन्होंने अपने पति पंकज सिनहा से इस बारे में बात की तो उन्होंने कहा- अगर दिल से करना चाहती हो तो करो, मैं सहयोग करूंगा। लेकिन वह फिर ऑफिस के एसाइनमेंट पूरे करने में व्यस्त हो गयीं। उनके मन में बार-बार विचार आता लेकिन तब तक कोई दिशा तय नहीं कर पा रही थीं। हस्तकलाओं को बचाने की प्रबल

इच्छा रखने वाले उनके परिचितों ने एनजीओ के गठन का सुझाव दिया। इस तरह 'रेखाकृति'' एनजीओ की शुरूआत हुई। उन्होंने संस्था का रजिस्ट्रेशन कराया और जमीनी स्तर पर काम शुरू कर दिया। शुरू में ही तय किया गया कि सरकारी/गैर सरकारी अनुदान नहीं लिया जाएगा ताकि काम पर कोई उंगली नहीं उठ सके। सदस्यों ने कंट्रीब्यूशन कर 10 हजार रुपये की पूंजी जमा की और इसी से काम की शुरुआत हुई। एनजीओ के सभी पदाधिकारी अलग-अलग अपनी नौकरी और व्यवसाय में व्यस्त रहते थे लेकिन थोड़ा समय एनजीओ के काम के लिए भी निकालते थे। किन कलाओं को चुना जाए, इसके लिए टीम ने काफी फील्ड वर्क किया। फील्ड वर्क के बाद ये नतीजा निकला कि मूंज कला, लकड़ी के खिलौने और लकड़ी के परम्परागत सजावटी सामान बनाने की कला को प्रोत्साहन की जरूरत है।

सुश्री सिनहा बताती हैं कि कभी उत्तरप्रदेश के ग्रामीण इलाकों में ज्यादातर महिलाएं मूंज से मौनी, सेनी, डलवा आदि अपने उपयोग के लिए बनाती थीं लेकिन समय के साथ ये कला सिमटती गयी। प्लास्टिक के बने डिब्बे और बर्तनों ने मूंज को पीछे कर दिया। केवल शादी में देने के लिए मूंज की पिटरिया, डलिया आदि बनायी जाती है। ये भी धीरे-धीरे कम होती जा रही है। इसको बनाने में नयी पीढ़ी की महिलाएं रुचि नहीं लेतीं। ऐसे में महिलाओं को मूंज का सामान बनाने के लिए प्रेरित करने में बहुत मुश्किलें आयी। जमीनी स्तर पर कैसे काम शुरू किया?, इसके जवाब में उन्होंने बताया कि महिलाओं के छोटे-छोटे समूह बनाये। शुरू में परम्परागत डिजाइन व आकार के सामान उनसे बनवाये। फिर बाजार की मांग के अनुसार नये डिजाइन बनाने के लिए उन्हें प्रेरित किया। समूह की महिलाओं को अपने इस काम की अच्छी कीमत मिलने लगी तो देखादेखी और महिलाएं जुड़ने लगीं। इलाहाबाद, देवरिया, भदोही और लखीमपुर की महिलाओं ने नये डिजाइन में बेहतर काम किया। रेखाकृति से जुड़ी महिलाएं परम्परागत सामानों के साथ मूंज के इको फ्रेण्डली यूटिलिटी बॉक्स, फ्रूट बाउल, रोटी सर्वर, कोस्टर सेट, टेबल मैट, कटलरी स्टैण्ड, पेन स्टैण्ड, फ्लावर वास, ट्रे, घड़ा, डस्टबिन, वॉल हैंगिंग आदि बनाने लगीं। फिर वाराणसी व चित्रकूट के बने लकड़ी के खिलौनों को आज की जरूरत के मुताबिक बदलाव लाकर और क्वालिटी कंट्रोल कर बनवाया। चार तरह के खिलौने बनाने से शुरूआत हुई, आज खिलौनों की कैटेगरी में 50 प्रोडक्ट शामिल हो चुके हैं। होम डेकोर कैटेगरी में हैण्डमेड व हैंण्डपेंटेड वुडेन कर्टेन हैंगिंग, विंड चाइम, कार हैंगिंग, की रिंग, पेन्सिल कैप, फोटो फ्रेम, वुडेन पेन,वुड कार्विंग लालटेन, डिब्बे, धार्मिक मूर्तियां, नाव बॉक्स आदि डिजाइन कर बनवाये। बचपन से ही कलात्मक अभिरुचि होने और कलाओं के बारे में लगातार अध्ययन करने, लेख लिखने और कलाकार मित्रों के सम्पर्क में रह कर सीखते रहने से प्रोडक्ट डिजाइनिंग में मदद मिली। इंटरनेट सर्चिंग से हस्तशिल्प बाजार की मांग से लगातार अपडेट रही।

किन चुनौतियों का सामना करना पड़ा?, इस सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि इन सामानों को कहां और कैसे बेचा जाए, यह सबसे बड़ी चुनौती थी। जीवन भर पत्रकारिता की। व्यवसाय का एबीसीडी भी नहीं आता था लेकिन पति और रेखाकृति टीम के सहयोग और अपनी गलतियों से सीख कर आगे बढ़ी। पहले तय किया कि प्रदर्शनी सह सेल लगायी जाए। लखनऊ में दुर्गापूजा के दौरान पहली प्रदर्शनी लगायी गयी। उम्मीद से कहीं अच्छी बिक्री हुई। लेकिन रेगुलर बिक्री दूर की कौड़ी लग रही थी। फिर सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर इस काम को सामने लाया गया। सफलता की अगली सीढ़ी तब पैरों के नीचे आ गयी, जब दवा व्यवसायी पति ने सोल प्रोपराइटरशिप कम्पनी 'रेखाकृति' का रजिस्ट्रेशन करा

कर जन्मदिन का तोहफा दिया। इसके साथ ही ऑनलाइन सेल करने का नया रास्ता खुल गया। 'रेखाकृति'के प्रोडक्ट सबसे पहले ई कामर्स वेबसाइट स्नैपडील पर बिक्री के लिए उपलब्ध हुए। बेहतरीन क्वालिटी की वजह से 'रेखाकृति' के कई प्रॉडक्ट छह महीने के अन्दर ही स्नैपडील पर फाइव स्टार रेटिंग पा गये। अमेजन, ईबे, पेटीएम, शॉपक्लूज, क्राफ्टविला आदि ई कामर्स वेबसाइट पर भी ये प्रॉडक्ट अपनी जगह बना चुके हैं। वह बताती हैं कि समय की मांग को देखते हुए बी2बी पोर्टल इण्डिया मार्ट, ट्रेड इण्डिया व एक्सपोर्टर्स इण्डिया पर प्रमोशनल वेबसाइट बनायी और फेसबुक पर भी 'रेखाकृति' का सेल पेज बनाकर सेल ग्रुप्स पर प्रोडक्ट प्रमोशन किया। नतीजा सामने था गूगल सर्च पर मूंज बास्केटरी सप्लायर सर्च करने पर पहले दो पेज पर रेखाकृति ही छाया रहता है। ये हमारे खाते में आयी बड़ी उपलब्धि रही। सुश्री सिनहा ने बताया कि लुप्त होती कला को बचाने के जुनून में पत्रकारिता की व्यस्तता आड़े आने लगी तो एक वर्ष पहले नौकरी से इस्तीफा दे दिया और खुद को पूरी तरह इस काम में लगा दिया। मेहनत का परिणाम यह रहा कि देश भर से ही नहीं विदेशों से भी इन्क्वायरी आने लगी। देश के कई बड़े एक्सपोर्टर विदेशों में सप्लाई के लिए 'रेखाकृति' के मूंज व लकड़ी के प्रोडक्ट पर भरोसा जता रहे हैं। दो वर्ष में देश में दो दर्जन प्रदर्शनी सह सेल में शामिल होने के साथ ही रेखाकृति के खाते में कैलीफोर्निया में दो इंटरनेशनल प्रदर्शनी में अपनी कृतियों के प्रदर्शन की उपलब्धि भी जुड़ी। लगभग दो सौ कारीगरों के जीवन में खुशहाली लाने का हमारा प्रयास जारी है। टीम रेखाकृति की सफलता का मूल मंत्र ये है कि बड़े आर्डर के साथ ही छोटे-छोटे आर्डर को महत्वपूर्ण मानते हुए गुणवत्ता से पूरा करते हैं। भविष्य की योजनाओं के बारे में सुश्री सिनहा बताती हैं कि हम अभी प्रदेश की तीन हस्तकलाओं के संरक्षण का काम कर रहे हैं। आने वाले समय में कुछ और लुप्त होती कलाओं को इसमें शामिल किया जाएगा। वह बताती हैं कि वह इन कलाओं का डाक्यूमेंटेशन कर किताब का प्रकाशन भी करेंगी। भविष्य में इन पर डाक्यूमेंट्री बनाने की भी योजना है। साथ ही यूपी के समृद्ध हस्तशिल्प और परम्परागत खिलौनों के प्रति जागरुकता लाने के लिए अभियान भी चलाये जाएंगे।